पीपल

बरगद

बेल

देवदार

१५. धर्मनाथ	दधिपर्ण	कैथा	*फेरोनिया एलीफैण्टम*
१६. शान्तिनाथ	नन्दी	तून	*सिड्रैला तूना*
१७. कुंथुनाथ	तिलक	तिलक	*वेन्डलेन्डिया एक्सर्टा*
१८. अरहनाथ	आम्र	आम	*मैन्जीफेरा इण्डिका*
१९. मल्लिनाथ	अशोक	अशोक	*सराका इण्डिका*
२०. मुनिसुव्रत नाथ	चम्पक	चम्पा	*माइकेलिया चम्पाका*
२१. नमीनाथ	वकुल	मौलश्री	*मोमोसॉप्स एलेन्जी*
२२. नेमीनाथ	वंश	बांस	*बैम्बू प्रजाति*
२३. पार्श्वनाथ	देवदारू	देवदार	*सीड्रस देवदारा*
२४. महावीर / वर्धमान	साल	साल	*शोरिया रोबस्टा*

जैन धर्म के आचार्यों व उपाध्यायों का मानना है कि केवली वृक्षों में तीर्थंकरों के अंश विद्यमान रहते हैं, जिनकी सेवा, दर्शन या अर्चना से संबन्धित तीर्थंकरों की कृपा प्राप्त होती है।

इस तरह जैन धर्म स्थलों पर 'केवली वृक्षों' के रोपण से उस स्थल की अध्यात्मिक शक्ति में वृद्धि होती है, अतः हमे जैन धर्म स्थलों पर केवली वृक्षों का रोपण करना चाहिए।

चूँकि सभी २४ तीर्थंकर एक चक्र (विशिष्ट काल अवधि) में क्रमशः अवतरित होते है अतः 'केवली वृक्षों' को एक चक्र की परिधि पर क्रम से रोपित करना चाहिए जिसका एक स्वरूप निम्न प्रकार हो सकता है –

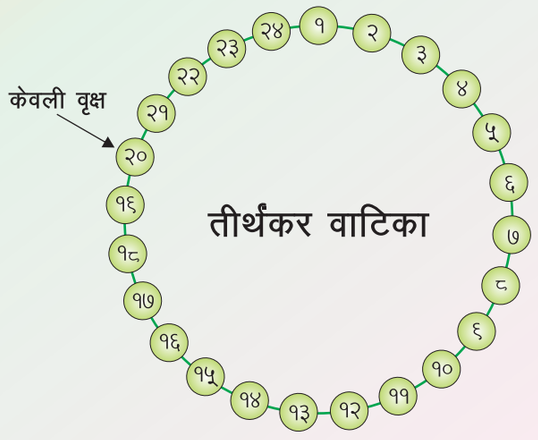

उ.प्र. राज्य जैवविविधता बोर्ड

पूर्वी विंग, तृतीय तल, ए ब्लाक, पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (उ०प्र०) 226010; फोन : 0522–4006746, 2306491 द्वारा प्रकाशित

वेबसाइट : upsbdb.org; **ईमेल :** upstatebiodiversityboard@gmail.com

आलेख : वी. के. जैन, सहायक वन संरक्षक

मुद्रक : शिवम् आर्ट्स, 211, निशातगंज, लखनऊ; दूरभाष : 2782172, 2782348; email : shivamarts@sancharnet.in

तीर्थंकर वाटिका

उ० प्र० राज्य जैवविविधता बोर्ड

तीर्थंकर वाटिका

(जैन तीर्थंकरों के केवली वृक्षों का रोपण)

"बहुत सारे लोग पेड़ों को काटकर बीमार पड़ जाते है, उन्हें पता नहीं चलता है कि यह बीमारी उन्हें क्यों आयी है।" **– महावीर स्वामी**

जैन धर्म में 'जैन' शब्द 'जिन' शब्द से बना है जिसका अर्थ है– समस्त मानवीय वासनाओं पर विजय प्राप्त करने वाला। वास्तव में जैन धर्म में मानवीय वासनाओं पर विजय प्राप्त करने का प्रयास श्रेष्ठतम पुरूषार्थ के रूप में निरुपित है।

तीर्थ का शाब्दिक अर्थ है– 'नदी पार कराने का स्थान अर्थात घाट।' इस शब्द का व्यवहारिक अर्थ है भवसागर (जन्म मृत्यु के बन्धन) से मुक्त करने वाला स्थान। अतः जो भवसागर से पार कराने वाले धर्म रूपी तीर्थ का प्रवर्तन करते हैं वे तीर्थंकर कहलाते हैं।

जैन धर्म के हर चक्र (विशिष्ट काल अवधि) में २४ तीर्थंकर होते हैं, वर्तमान चक्र में २४ तीर्थंकर हो चुके हैं जिनमें १८ का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ है , इनके नाम और प्रदेश में जन्म स्थल क्रमशः निम्न अनुसार हैं–

१) ऋषभनाथ (अयोध्या) २) अजितनाथ (अयोध्या)
३) संभव नाथ (श्रावस्ती) ४) अभिनन्दन (अयोध्या)
५) सुमतिनाथ (अयोध्या) ६) पदमनाथ (कौशाम्बी)
७) सुपार्श्वनाथ (वाराणसी) ८) चनद्रप्रभनाथ (वाराणसी)
९) पुष्पदन्त (देवरिया) १०) शीतलनाथ
११) श्रेयांसनाथ (वाराणसी) १२) वासुपूज्य
१३) विमलनाथ (फर्रुखाबाद) १४) अनन्त नाथ (अयोध्या)
१५) धर्मनाथ (फैजाबाद) १६) शान्तिनाथ (हस्तिनापुर)
१७) कुंथुनाथ (हस्तिनापुर) १८) अरहनाथ (हस्तिनापुर)
१९) मल्लिनाथ २०) मुनिसुव्रत नाथ
२१) नमीनाथ २२) नेमीनाथ (आगरा)
२३) पार्श्वनाथ (वाराणसी) २४) महावीर

सप्तपर्णी

चीड़

अन्तिम तीर्थंकर वर्धमान महावीर का जन्म ५९९ ई.पू. व निर्वाण ५२७ ई.पू. में हुआ था, वर्ष २००१–२००२ में इनका २६००वाँ जन्म कल्याणक महोत्सव वर्ष मनाया जा रहा है।

केवली वृक्ष :

तपस्या के क्रम में सभी तीर्थकरों को विशुद्ध ज्ञान (केवल ज्ञान) की प्राप्ति किसी न किसी वृक्ष की छाया में प्राप्त हुई थी, अतः इन वृक्षों को जिनके नीचे तीर्थंकरों को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई जैन धर्म में उन्हें केवली वृक्ष कहा जाता है। वर्त मान चक्र के सभी तीर्थंकरों के केवली वृक्ष निम्न प्रकार हैं –

तीर्थंकर और उनके केवली वृक्ष

क्र. स.	तीर्थंकर	केवली वृक्ष *संस्कृत नाम*	*हिन्दी नाम*	*वैज्ञानिक नाम (देवनागरि में)*
१.	ऋषभनाथ	न्यग्रोध	वट वृक्ष	*फाइकस बन्गालेन्सिस*
२	अजितनाथ	सप्तपर्ण	चितवन, सप्तपर्णी	*एलस्टोनिया स्कोलेरिस*
३	संभव नाथ	शाल	साल, साखू	*शोरिया रोबस्टा*
४	अभिनन्दन	सरल	चीड़	*पाइनस राक्सबर्घाइ*
५.	सुमतिनाथ	प्रियंगु	पियंगु	*केलीकार्पा मेक्रोफिला*
६.	पदमनाथ	प्रियंगु	पियंगु	*केलीकार्पा मेक्रोफिला*
७.	सुपार्श्वनाथ	शिरीष	सीरस	*अलबिजिया लीबेक*
८.	चनद्रप्रभनाथ	नाग	नागकेसर	*मेसुआ फेरिया*
९.	पुष्पदन्त	बहेड़ा	बहेड़ा	*टरमिनेलिया बलेरिका*
१०.	शीतलनाथ	विल्व	बेल	*ईगल मारमिलोस*
११.	श्रेयांसनाथ	तेंदू	तेंदू	*डायोस्पाइरस इम्ब्रायोप्टेरिस*
१२.	वासुपूज्य	कदम्ब	कदम्ब	*एन्थोसिफेलस कदम्बा*
१३.	विमलनाथ	जम्बू	जामुन	*साइजीजियम क्यूमिनाई*
१४.	अनन्त नाथ	पीपल	पीपल	*फाइकस रैलीजियोसा*

नागकेसर

कदम्ब